International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा के संदर्भ में अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन

ज्योति शर्मा
शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. श्रद्धा सिंह चौहान
शोध निर्देशिका
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री अग्रसेन स्नातकोतर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई.
केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर (राज.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा के संदर्भ में अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययनका अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए जयपुर जिले के 120 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।इस शोध कार्य में आंकडों का संकलन करने के लिए एम. मुखोपाध्याय व डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन संबंधी आदत परीक्षण का प्रयोग किया गया। आंकडों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया।प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। वहीं लैंगिक आधार पर जब तुलना की गई तो निष्कर्ष स्वरूप ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर है जबकिमाध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्दः–माध्यमिक स्तर एवं अध्ययन आदत।

प्रस्तावना

भाषा एक औजार है, जिसका प्रयोग हम ज़िंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन–जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। इसके साथ–साथ भाषा हमारी सभ्यता व संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। भाषा संवाद व संप्रेषण का माध्यम है, चाहे वह बोलचाल के रूप में हो, चाहे लेखन के रूप में या फिर संकेतों में। मनुष्य की भावाभिव्यक्ति व अपने अनुभवों को बांटने के लिए भाषा ही एक सबसे अहम माध्यम है। भाषा के ज्ञान से मनुष्य की सृजनात्मक भाक्ति भी बढ़ती है, उसमें मौलिकता भी आती है और वह अपने विचारों को बेहतर ढ़ंग से प्रस्तुत कर सकता है। भाषा के माध्यम से व्याकरणिक स्वरूप, वाक्य रचना, वर्तनी व काव्य रचना का ज्ञान प्राप्त होता है। भाषा से विद्यार्थी दुनिया की मुख्य विशेषताओं से परिचित होकर इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, राजनीतिक पहलू,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैज्ञानिक व आधुनिक सूचना व तकनीकि से परिचित हो सकते है। अर्थात् भाषा विद्यार्थियों के अधिगम को बढ़ाने में सहायक है।

अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और आम प्रचलित प्रक्रिया है। जन्म के तुरन्त बाद से हीव्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और जीवन पर्यन्त जाने–अनजाने कुछ न कुछ सीखता रहता है। प्रत्यक्षऔर अप्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से एक व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन होते रहते हे। अनुभवों द्वाराव्यवहार में होने वाले इन परिवर्तनों को साधारण रूप में सीखने की संज्ञा दे दी है।सीखने के द्वारा हमारे व्यवहार मे जो परिवर्तन होता है, वह पूरी तरह से हमारे द्वारा अर्जित ही होता है। यह व्यवहार जन्मजात नहीहोता। शिक्षा के क्षेत्र में आदतें मुख्य भूमिका निभाती है। जिन बच्चों को अध्ययन में ध्यान लगाने की आदत हैउन्हें स्कूल व घर में पढते समय थकान देरी से होती है। जिन बच्चों को अध्ययन के दौरान चिन्तन,तर्क–वितर्क करने की आदत हो, वे बच्चे कम समय में व ज्यादा आसानी से अध्ययन सम्बन्धी ज्ञान अर्जन करतेहै। इस प्रकार अध्ययन आदतें बच्चे के शैक्षिक विकास में अहम् भूमिका निभाती है ।

ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में अलग–अलग तकनीकियों का प्रयोग करता है। कुछ बच्चेएकान्त में पढना चाहते है, कुछ पुस्तकालय में, कुछ किताबों में महत्वपूर्ण बिदुओं को रेखांकित करके पढ़ते हैतो कुछ अलग से नोट्स तैयार कर लेते है कुछ निरन्तर काफी समय तक बैठकर पढ़ते है तो कुछथोडी–थोडी देर के अन्तराल से पढ़ते है। इन्हें अध्ययन आदत का नाम दिया गया है। दूसरे शब्दों में अध्ययनआदत वह है जो प्रत्येक बच्चा अपनी सीखने की क्रिया के दौरान स्वंय बनाता है। अधिगमकर्त्ता सीखने केदौरान जिन आदतन योग्यताओं को उपयोग में लाता है वे उसकी अध्ययन आदतें कहलाती हैं।

माध्यमिक शिक्षा जो कि प्रारम्भिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है जहाँ प्राथमिक शिक्षा सेनींव तैयार होती है। अर्थात् माध्यमिक स्तर शैक्षिक संरचना में मध्य का स्तर होता है। माध्यमिक शिक्षा इस नींव को उच्च शिक्षा के लिये मजबूती प्रदान करती है। अतःकिसी भी प्रकार की शिक्षा का ढाँचा हो उसमें माध्यमिक शिक्षा का विशेष स्थान है।माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी उस आयु स्तर के होते है जिन्हें हम न तो छोटा कह सकते है और न ही बडे क्योंकि वो न तो पूर्ण परिपक्वता की अवस्था में होते है। इस स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में गुजरता है। इस प्रकार की अवस्था में उनके द्वारा निर्धारित किए गये लक्ष्यों व उद्धेश्यों के रास्ते से भटकने का संदेह बना रहता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में उर्जा बहुत होती है, जिससे वह विभिन्न गतिविधियों में लगा रहता है।

इसलिए इस स्तर पर विद्यार्थियों में उचित अध्ययन आदत होना बहुत आवश्यक है। उचित अध्ययन आदत होने से विद्यार्थी अपने सामने आने वाली कइिनाइयों जो उसे समाज में समायोजन करनेके समय सामने आती है, उसका सामना करने में सक्षम बनता है। अध्ययन आदत केवल विद्यार्थियों का चहुंमुखी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विकास ही नहीं करती है,बल्कि यह संपूर्ण समाज का विकास करता है। जिससे विद्यार्थी केवातावरण के अनुकूल होने से उसका पूर्ण विकास होते रहता हैतथा उसमें अच्छी आदतें, सदाचारी आदतें वातावरणी होती जातीहै। इस कारण उचित अध्ययन आदत आवश्यक है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1 शर्मा, गोपेश (2022) ने कक्षा 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम में ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण में धनात्मक सहसंबध है। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पायी गयी। कक्षा 12 के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में अतिनिम्न धनात्मक सार्थक सहसंबध पाया गया। सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें भी उच्च नहीं है एवं गैर सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उच्च नहीं है। के विद्यार्थियों की समायोजन एवं पारिवारिक वातावरण में धनात्मक सहसंबध पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों का समायोजन स्तर भी उच्च है।

2 कुमार, शैलेन्द्र एवं यादव, सरोज (2020) ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों की अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में निष्कर्ष पाये गये कि माध्यमिक स्तर पर विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत की विमा समझ एवं ई–संसाधनों के प्रयोग में सार्थक अन्तर है, जबकि माध्यमिक स्तर पर विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत की विमा एकाग्रता, योजना, अन्तर्क्रिया, अध्ययन से सम्बन्धित वातावरण एवं अभ्यास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3 खान, दौलत (2020) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्य, अध्ययन आदतों और आकांक्षा स्तरों का विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों में पाया कि राजस्थान जैसे भारत के क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बडे राज्य एवं विभिन्न प्रकार की भौगोलिक भिन्नताओं जैसे प्रान्त के शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्यों, अध्ययन आदतों व आकांक्षा स्तर में कोई तुलनात्मक अन्तर पाया गया है। इन चरों के आधार पर देखा जाए तो राजस्थान के मरू, मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों के अधिकांश

शिक्षार्थियों का व्यक्तित्व सामान्य स्तर का, व्यक्तिगत मूल्य उच्च स्तर के, अध्ययन आदतें सामान्य स्तर की तथा आकांक्षा स्तर सामान्य स्तर का पाया गया है। राजस्थान के मरु क्षेत्र व पहाड़ी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों में व्यक्तित्व के आधार पर कोई अन्तर नहीं पाया गया है। राजस्थान के मरु क्षेत्र, मैदानी क्षेत्र व पहाड़ी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों व्यक्तिगत मूल्यों में अंतर पाया गया।

4 खटकर, हेमन्त कुमार (2020) किशोरियों के अध्ययन आदतों का व्यक्तित्व प्रकार के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि शोधकर्ता ने अध्ययन में छत्तीसगढ के शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के 120 किशोरियों का स्वतंत्र चर के अंतर्गत व्यक्तित्व प्रकार एवं आश्रित चर के अंतर्गत अध्ययन आदतों का चयन "यादृच्छिक प्रतिदर्शन" आधार पर किया। जिसका परिणाम अंतर्मुखी किशोरियों का प्रतिशत 23.33 उभयमुखी किशोरियों का प्रतिशत 45, बहिर्मुखी किशोरियों का प्रतिशत 31.87 है। अंतर्मुखी किशोरियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है। बहिर्मुखी किशोरियों का प्रतिशत अंतर्मुखी किशोरियों की में अधिक है। उभयमुखी व्यक्तित्व का प्रतिशत सर्वाधिक है। अंतर्मुखी एवं उभयमुखी किशोरियों के अध्ययन में सार्थक अंतर है तथा अंतर्मुखी किशोरियों का अध्ययन आदत उभयमुखी किशोरियों से बेहतर है। अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी किशोरियों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर है तथा अंतर्मुखी किशोरियों का अध्ययन आदत बहिर्मुखी किशोरियों से बेहतर है। बहिर्मुखी किशोरियों के अध्ययन में सार्थक अंतर है तथा उभयमुखी किशोरियों के अध्ययन आदत बहिर्मुखी किशोरियों से बेहतर है।

5 कुमार, कुलदीप (2019) ने माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों का समायोजन स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतें अच्छी होती है। छात्र एवं छात्राओं के उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर का अध्ययन आदतों पर सामान्य प्रभाव पड़ता है।

पूर्व में हुए साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि वैसे तो अध्ययन आदतों पर बहुत कार्य हो चुके हैं, परन्तु शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में अध्ययन नगण्य हैं। इस अध्ययन के माध्यम से शोधकर्त्री यह जानने का प्रयास कर रही है कि क्या विद्यार्थियों की भाषा के संदर्भ में उनकी अध्ययन आदतों में कोई अंतर पाया जाता है या नहीं। अतः शोध के माध्यम से इसी जिज्ञासा समाधान हेतु इस विषय का चयन किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उद्देश्य

1 माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2 माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3 माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1 माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2 माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3 माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि –इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –इस शोध कार्य में न्यादर्श के लिए 120 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण –इस शोध कार्य में आंकडों का संकलन करने के लिएएम. मुखोपाध्याय व डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन संबंधी आदत परीक्षणका प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि– आंकडों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 –माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या : 1

माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी	60	241.78	17.38	1.98	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
अग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी	60	247.89	16.49		

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतरसे संबंधित सांख्यिकीय परिणाम दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का माध्य मान 241.78 तथा मानक विचलन 17.38 है। दूसरी ओर उच्च अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का माध्य मान 247.89 तथा मानक विचलन 16.49है। प्राप्त माध्यों में अंतर की गणना टी परीक्षण द्वारा की गयी। इससे टी परीक्षण का मान 1.98 प्राप्त हुआ। टी परीक्षण का परिकलित मान तालिका के मान से अधिक है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पना– 2 माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या : 2

माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
हिन्दी माध्यम के छात्र	30	237.93	17.56	2.22	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
हिन्दी माध्यम की छात्राएं	30	246.86	13.24		

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के छात्रों की अध्ययन आदतों का माध्य मान 237.93 तथा मानक विचलन 17.56 है। दूसरी ओर हिन्दी माध्यम की छात्राओंका माध्य मान 246.86 तथा मानक विचलन 13.24 है। प्राप्त माध्यों में अंतर की गणना टी परीक्षण द्वारा की गयी। इससे टी परीक्षण का मान 2.22 प्राप्त हुआ। टी परीक्षण का परिकलित मान तालिका के मान से अधिक है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 10, October 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पना– 3 माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या : 3

माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
अंग्रेजी माध्यम के छात्र	30	242.30	20.13	0.50	0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
अंग्रेजी माध्यम की छात्राएं	30	245.09	23.32		

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की अध्ययन आदतों का माध्य मान 242.30 तथा मानक विचलन 20.13 है। दूसरी ओर अंग्रेजी माध्यम की छात्राओंका माध्य मान 245.09 तथा मानक विचलन 23.32 है। प्राप्त माध्यों में अंतर की गणना टी परीक्षण द्वारा की गयी। इससे टी परीक्षण का मान 0.50 प्राप्त हुआ। टी परीक्षण का परिकलित मान तालिका के मान से कम है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सुझाव

- विद्यार्थियों को निश्चित समयबद्ध योजना बनाकर पढ़ाई करनी चाहिए।
- अध्ययन एक निश्चित शांत एवं उपयुक्त रोशनी वाले स्थान पर करना चाहिए।
- एक समय में एक विषय को एकाग्र चित होकर पढ़ना चाहिये साथ ही महत्वपूर्ण बिन्दुओं को अध्ययन केसाथ ही साथ उतार देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को हमेशा लिख कर पढ़ने की आदतडालनी चाहिये। साथ ही अध्ययन के लिये विद्यार्थियोंको समय का प्रबंधन करना आवश्यक है ।

- विद्यार्थी अपने उज्ज्वल भविष्य के लिये सदैव सजगएवं तत्पर रहें एवं अपनी अध्ययन आदत को नियमितरखे।
- विद्यार्थियों को पुस्तकालय में नियमित अध्ययन कीआदत डालनी चाहिए एवं सदैव पत्र–पत्रिकाओं कोपढ़ने की आदत डालनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को पढ़ने समय मोबाइल फोन का कम सेकम उपयोग करना चाहिए।

संदर्भ

- कपिल, एच.के. (2006) "अनसंधान विधियाँ", एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा ।
- त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., (2006) "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- ढौ ड़ियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू, (1997) "रिसर्च इन एज्यूकेशन", प्रिटिंग हॉल प्रा. लि., नई दिल्ली।
- भटनागर, चां द तथा राय, पारसनाथ, (1977) "अनुसंधान परिचय", एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
- भटनागर, आर. पी. तथा मीनाक्षी,(2007) 'शिक्षा अनुसंधान' लायल बुक डिपो, मेरठ।
- पाठक, पी.डी., (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनो द पुस्तक मंदिर, आगरा।
- शर्मा, आर. ए., (2009) 'शिक्षा अनुसंधान', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदि, शिखा (2013) ''शिक्षा मनोविज्ञान के दार्शनिक आधार" आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा, डी.एल., (2005) "शिक्षा तथा भारतीय समाज", सूर्या पब्लिकेशनल, मेरठ।
- श्रीवास्तव डी.एस. एवं प्रीति (2014) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।